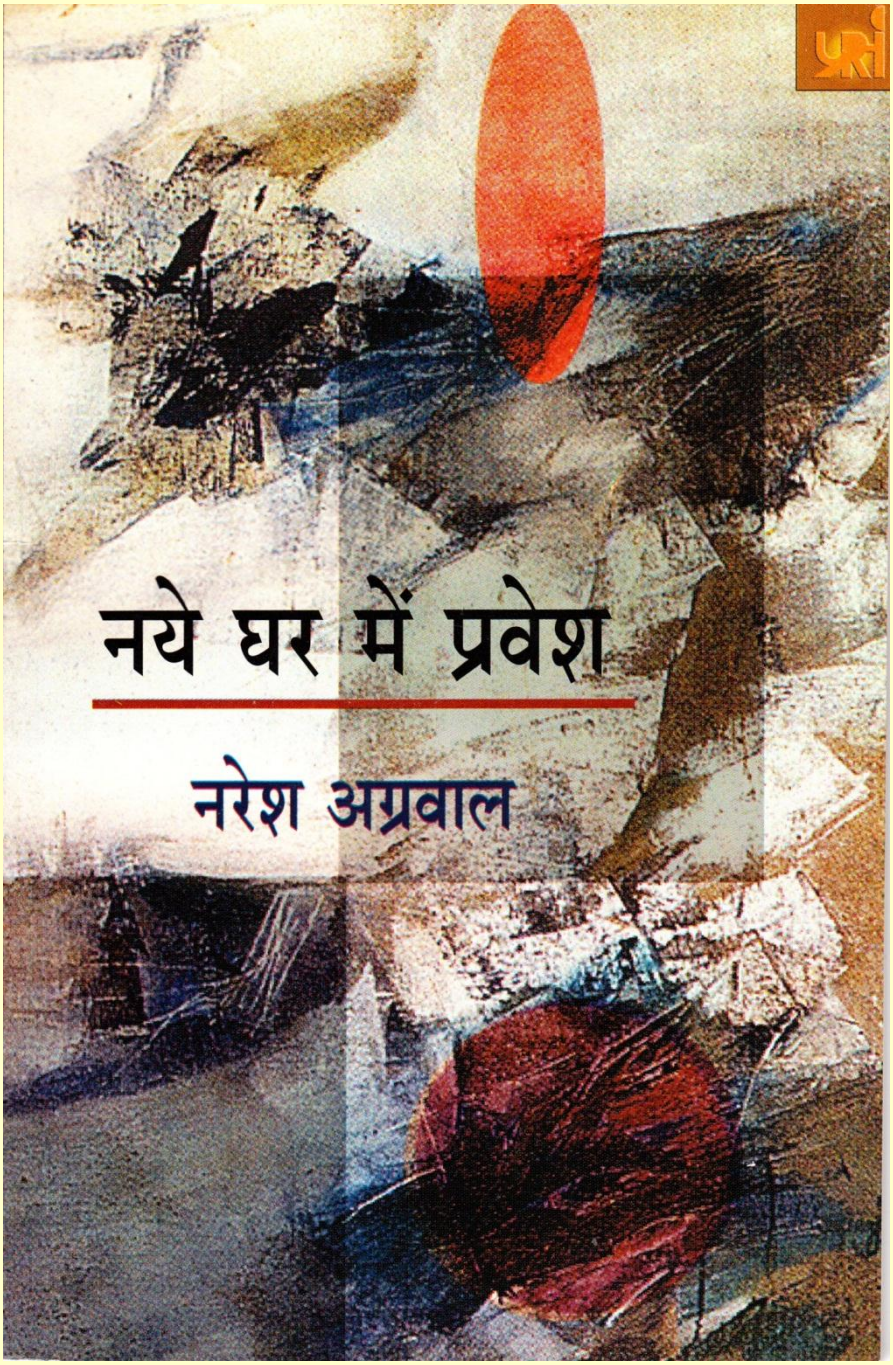
नये घर में प्रवेश
नरेश अग्रवाल

नये घर में प्रवेश

डॉ. नरेश अग्रवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित – डॉ. नरेश अग्रवाल

इस 'ई–पुस्तक' का प्रकाशन डॉ. नरेश अग्रवाल द्वारा स्वयं किया गया है।

पुस्तक के रूप में इसका प्रकाशन– प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, द्वारा सन् 2005 में किया जा चुका है।

ISBN: 81-7714-198-8

ई–पुस्तक प्रकाशन वर्षः सन् 2014

प्रकाशन संस्थान
4715/21 दयानंद मार्ग, दरियागंज,
नई दिल्ली – 110002
फोनः 23253234,
65283371

डॉ. नरेश अग्रवाल-एक परिचय

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।'' – इंडिया टुडे

1 सितम्बर 1960 को जमशेदपुर में जन्म।

अब तक स्तरीय साहित्यिक कविताओं की 6 पुस्तकों का प्रकाशन तथा शिक्षा सम्बन्धित 6 पुस्तकों का प्रकाशन। साहित्य जगत में रचित पुस्तकों को अच्छी ख्याति प्राप्त। 'इंडिया टुडे' एवं 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं में भी इनकी समीक्षाएँ एवं कविताएँ छपी हैं। देश की सर्वोच्च साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' में भी इनकी कविताओं को स्थान मिला। लगभग सारी स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

'मरुधर' रंगीन द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन पिछले चार वर्षों से लगातार कर रहे हैं, जो आर्ट पेपर पर छपती है।

सन् 2014 में सूक्तियों पर 'सूक्ति-सागर' नाम से एक पुस्तक लिखी, जो भारतवर्ष में संभवतः यह पहला प्रयास होगा

जब किसी लेखक द्वारा स्तरीय 1000 सूक्तियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गयी।

'हिंदी सेवी सम्मान', 'समाज रत्न' सम्मान, अक्षर–कुंभ सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित।

पौधों की बोनसाई विद्या में पूर्ण रुप से पारंगत तथा हजारों र्दुलभ पौधे इनके संग्रह में शामिल। बोनसाई में अनेक पुरस्कार मिले।

शतरंज, ज्योतिष, हस्त रेखा एवं होम्योपैथी में कई साल तक विस्तृत अध्ययन।
लगभग 5000 पुस्तकें इनके निजी पुस्तकालय में संग्रहीत हैं।

फोटोग्राफी विद्या में पूर्ण रुप से दक्ष तथा अपने भ्रमण के दौरान हजारों तस्वीर का संग्रह इनके बेवसाईट पर उपलब्ध हैं।
यात्रा के बेहद शौकीन तथा अनगिनत जगहों की यात्रा की।

सम्पर्क –
रेखी मेन्शन, 8 डायगनल रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर–831001
दूरभाष – 9334825981, 7488504892
ई. मेल – **smcjsr77@gmail.com**
बेवसाईट : **www.nareshagarwala.com**

आत्मकथन

जब तक शब्द अक्षर थे वे चुपचाप थे, परन्तु जब वे चित्र बने, चलने लगे। एक सधी हुई कलम से सारा काव्य चित्रमय हो जाता है। घटनाएँ काल्पनिक न होकर एक जीती-जागती प्रस्तुति बन जाती हैं। वे सारे प्रतीक और उपमाएँ अपने पंख फड़फड़ाने लगती हैं, और जब समाप्त होता है कथन तो लगता है कुछ रहस्यमय उतर आया है हृदय में, वह भी बिना अनुमति के। इसी तरह के अनुभवों से सरोकार हो पाठक का, यही सोचकर इन कविताओं की रचना की गयी है।

अन्त में बस इतना कहना चाहूँगा-
लोग उलझे रहेंगे।
शताब्दी के नये-नये कारनामों में
हर दिन नयी चीजें उपलब्ध होंगी
उनके हाथों में
फिर भी मेरी कविताओं,
तुम्हें कोई संघर्ष नहीं करना पड़ेगा,
रखा जाएगा हाथों में जब भी तुम्हें
अँगुलियाँ पन्ने पलटने लगेंगी।

-डॉ. नरेश अग्रवाल

पूर्व लिखित पुस्तकों पर सम्मतियाँ

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।''
– इंडिया टुडे

''सब कुछ को सलीके से छिपाकर वे अपने पाठक को सरल से सरल भाषा में दृश्य–दर–दृश्य, कुछ अनसुने, अनदेखे और अनजाने को सुनने, देखने और जानने के लिये उकसाते हैं। इसलिए उस मर्म और तत्त्व को ढूँढ़ते हुए, वहाँ तक पहुँचने की प्रक्रिया में वे पाठक को खोजकर पाने के सुख से सुखी कर देना चाहते हैं। उसे अपने ढंग से अपने लिए पाकर पाठक के मन में उसके विस्तार और उसके प्रदर्शन की सबसे ज्यादा सम्भावना बनती है।''
लीलाधर जगूड़ी
(पद्मश्री एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित)

''ये कविताएँ ह्रदय का उद्गार हैं, ह्रदय की बात है। प्रभविष्णु कविचित्त पर जीवन के प्रसंगों ने जो तरंगें उत्पन्न की, उनकी अक्षत अभिव्यक्ति सरल–सुगम भाषा में कवि का अभीष्ट है। ये जीवन–प्रसंग जाने–पहचाने, रोज–ब–रोज के होते हुए भी एक विस्तृत सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत होकर नया अर्थ ग्रहण करते हैं।''
– अरुण कमल, कवि एवं सम्पादक

''नये घर में प्रवेश, नये घर में प्रवेश नहीं, कवि का अपनी अन्तश्चेतना की चौखटों को पारकर अपने आप को पाने, खोजने का प्रयत्न हे। गहन आत्मविश्लेषणात्मक है कवि का दृष्टि। दुनिया के सारे कुएँ से लेकर–कई कविताएँ।''
–चित्रा मुद्गल, उपन्यासकार

''श्री नरेश अग्रवाल की इन कविताओं में समय और परिवेश के प्रति कवि की विनम्रता आकर्षित करती है। इनमें किसी प्रकार का भावुक आवेश या आक्रामक उबाल नहीं है, न अनुभव और भाषा की स्फीति। अभिव्यक्ति का यह अनुशासन इन कविताओं को प्रौढ़ और चिन्तनपरक बनाता है।''
–श्री विश्वनाथ तिवारी
कवि एवं सम्पादक, दस्तावेज

''आपकी सृजनात्मकता ने नये धरातलों को स्पर्श किया है। अपने आसपास के जीवन से यह संलग्नता इनकी एक विशिष्ट पहचान बनाती है। संवेदनात्मक गहराई में डूबी हुई इन कविताओं को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। आपकी मार्मिकता मन को छूती है।''
– विजय कुमार, कवि एवं आलोचक

''आपकी प्रकृति आधारित कविताएँ भी मात्र दृश्यचित्र नहीं हैं, उनमें मन बोलता है। कश्मीर को आपने सैरगाह की जगह संवेदना बनाया है। अगर इन पुस्तकों का वितरण ठीक प्रकार से किया जाए तो ये समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होंगी।''
– ममता कालिया, साहित्यकार

''आपकी कविताओं में बड़ी सहजता है। अनुभवों का निर्व्याज आवेग है। बड़ी आत्मीय स्वतः स्फूर्तता है।''
– विजेन्द्र, कवि एवं सम्पादक

श्री नरेश अग्रवाल को वह दृष्टि प्राप्त है, जिस पैनी दृष्टि से कोई अपने चतुर्दिक का पर्यवेक्षण कर पाता है।

–श्रवण कुमार गोस्वामी
पूर्व सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति
गृह मन्त्रालय, भारत सरकार

अनुक्रम

तुम्हारे न रहने पर – 12
नये घर में प्रवेश – 13
दुनिया के सारे कुएँ – 15
मेरा मित्र – 16
खिलाड़ी – 17
तुम पुकारते रहे – 18
प्रभु होश मुझे इतना देना – 19
रफ्तार – 20
पीछे कुछ भी नहीं – 21
अच्छी हो सुबह तुम – 22
चिता के नजदीक – 23
जिसकी तलाश है हमें – 24
मैं भूल गया हूँ – 25
पेड़ – 26
हरियाली – 27
सुधार – 28
आशा में – 29
पार्क में एक दिन – 30
अवसर – 31
कबूतर – 32
बारिश – 33
उस दिन – 34
पुराने अनुभव – 35
डर पैदा करना – 36

पक्षी – 37
कम शब्द – 38
ताई के लिए – 39
मछुआरा – 41
हमारा परिवार – 42
बहुत पीछे – 43
ये घंटियाँ – 44
डूबते हुए जहाज में प्रेम – 45
यह नाव – 46
खिलाड़ी – 47
जाड़े के दिनों में – 49
एक अपंग बच्चे को देखकर – 50
बँधा हुआ कुत्ता – 51
अकेला आदमी – 52
जबर्दस्ती – 53
जल – 54
सच – 55
लकड़हारा – 56
चुनाव – 57
मुरझाने से पहले – 58
उस खुशी के दिन – 59
कोई कहता है, आँखें खोलो – 61
बड़ी उम्र के लोग – 62
मेरे दोस्त – 63
आत्माएँ – 64
बदलाव – 65

ज्ञानी – 66
मेरे पिता – 67
मेरा देश – 68
आज अचानक – 69
शादी पर – 70
आज सचमुच लगा – 71
समाज – 72
अब – 73
यह जगत – 74
मेरा लेखन – 75
धावक – 76
डूबती हुई नाव – 77
रूठे रहे तुम – 78
अब लगने लगा है – 79
अब जब सुनते हैं – 80
मैंने उसे खोया नहीं था – 81
प्रशंसा – 82
चिड़ियाँ – 83
तुम्हारा न रहना – 84

तुम्हारे न रहने पर

थोड़ा–थोड़ा करके
सचमुच हमने पूरा खो दिया तुम्हें
पछतावा है हमें
तुम्हें खोते देखकर भी
कुछ भी नहीं कर पाये हम,
अब हमारी आँखें सूनी हैं,
जिन्हें नहीं भर सकतीं
असंख्य तारों की रोशनी भी
और न ही है कोई हवा
मौजूद इस दुनिया में
जो महसूस करा सके
उपस्थिति तुम्हारी,
एक भार जो दबाये रखता था
हर पल हमारे प्रेम के अंग
उठ गया है, तुम्हारे न रहने से
अब कितने हल्के हो गये हैं हम
तिनके की तरह पानी में बहते हुए ।

❑❑❑

नये घर में प्रवेश

वर्षों से ताला बन्द था
उस नये घर में
कोई सुयोग नहीं बन रहा था
यहाँ रहने का
आज किसी शुभ हवा ने
दस्तक दी और खुल गये इसके द्वार
देखता हूँ, बढ़ रहा है
इसमें रहने को छोटा-सा परिवार
माता-पिता बच्चों सहित
साथ में दादा-दादी
सभी खुश हैं
आज पहली बार खाना बनेगा
इसके रसोई घर में
छोंकन से महकेगा सारा घर
कुछ बचा-खुचा नसीब होगा
आस-पास के कुत्तों और पक्षियों को भी
कुछ पेड़-पौधे भी लगाये जाएँगे
साथ में तुलसी घर भी होगा आँगन में
पिछवाड़े में होंगे स्कूटर और साइकिल
और एक कोने में स्थापित होंगी
ईश्वर की कुछ मूर्तियाँ।
कुछ ऊँचे स्वर भी सुनाई देंगे
कभी-कभार दादा के

जो बतायेंगे
अभी घर की सारी सुरक्षा का भार
उन्हीं के सिर पर है।

❑❑❑

दुनिया के सारे कुएँ

मँडरा रहा है यह सूरज
अपना प्रबल प्रकाश लिए
मेरे घर के चारों ओर
उसके प्रवेश के लिए
काफी है एक छोटा सा सूराख ही
और जिन्दगी
जो भी अर्जित किया है मैंने
उसे बहार निकाल देने के लिए
काफी होगा एक सूराख ही
और प्रशंसनीय है यह तालाब
मिट्टी में बने हजार छिद्रों के बावजूद
बचाये रखता है अपनी अस्मिता
और वंदनीय हो तुम दुनिया के सारे कुओं
पाताल से भी खींचकर सारा जल
बुझा देते हो प्यास हर प्राणी की ।

❑❑❑

मेरा मित्र

किसी को भुलाया नहीं जा सकता
एक-एक करके सब लौट आयेंगे
वापस इस जिन्दगी में
अलग-अलग विचित्र चीजें
दिखाई देंगी इन रास्तों पर
लेकिन यह नीला आकाश
वैसा का वैसा
दूर से अपने रंग भरता हुआ
कभी नहीं छोड़ेगा हमारा पीछा
क्या यही है मित्र मेरा सबसे बड़ा
और इसके पास तो हैं
बड़े-बड़े चाँद-सितारे
मैं एक छोटा सा शून्य
वो भी बिना किसी चमक का
फिर भी यह सम्बन्ध बनाये रखता है मुझसे
भेजता रहता है अपनी रोशनी मुझे हर पल।

❑❑❑

खिलाड़ी

कुछ अलग सा होता है
एक बड़े खिलाड़ी का खेल
मारता है वह गेंद
अपनी पूरी ताकत से
जैसे कोई विस्फोट हुआ हो
लेकिन निशाना निर्धारित करती है आँख
और इस गेंद को देखो
आकाश और जमीन के बीच उड़ती हुई
इसमें खिलाड़ी की आँख भी है
पाँव भी है
और मजबूत इरादा भी,
गिरती है यह जब गोल पोस्ट के भीतर
वाह–वाह होती है कितनी
जबकि एक नये खिलाड़ी के पास
न तो वो आँख और न ही वो पाँव
इरादा भी गिरा हुआ
इसलिए झूमती है उसकी गेंद
बच्चे की तरह इधर–उधर।

❑❑❑

तुम पुकारते रहे

सचमुच था मैं अब भी लापरवाह
सजगता मुझे बुलाती रही
बहुत सारा कुछ था इन निर्जीवों में भी
और उनकी प्रतीक्षा
कोई आये और निहारे उन्हें
प्रशंसा करे उनकी
और अफसोस मेरे बिना नाम के मित्रों
मैं पहुँच नहीं पाया तुम तक
गड़ाये रहा कदमों को सख्त धरती पर ही
और तुम पुकारते रहे मुझे ।

❑❑❑

प्रभु होश मुझे इतना देना

प्रभु इतना सारा होश दे मुझे
करूँ सारे काम अच्छी तरह
लिखूँ तो बिन्दू भी न छूटे
पढ़ूँ तो याद रहे कॉमा भी
सोचूँ तो सिर्फ मकसद याद रहें
बोलूँ तो सिर्फ काम की बात
होश मुझे इतना देना
करूँ सारी दुनिया से प्यार ।

❑❑❑

रफ्तार

लापरवाही से सख्त नफरत रही मुझे
उतनी ही नफरत लापरवाह लोगों से
और कुछ–कुछ कामों में
मैं भी था बेहद लापरवाह
लेकिन उतना ही सख्त
जब आ जाते थे महत्वपूर्ण काम सिर पर
होती थी परवाह, थोड़ी सी भी आँच न आये मुझ पर
जरा–सी बैठी धूल पर भी
उगलने लगता था आग मैं
चाहिए था मुझे सब कुछ साफ–सुथरा
कसा हुआ पहिए की तरह
और जिन्दगी को देखना चाहता था
दौड़ते हुए इसी तरह
कभी रफ्तार मुझमें कम होती थी, कभी अधिक
लेकिन बढ़ तो रहा था मैं
एक ही लय में, एक दिशा में ।

❑❑❑

पीछे कुछ भी नहीं

यह जिन्दगी विभाजित है
टुकड़ों–टुकड़ों में
जबकि हम सोचते हैं, यह एक है
जो अभी जिया, वो थोड़ी देर बाद नहीं
कल नहीं, परसों नहीं, कभी नहीं
मुझे जो दिया गया है मौका प्रकृति ने
उसे आगे देखने को बढ़ाता हूँ कदम,
शेष रह जाता है कुछ भी नहीं ।

❑❑❑

अच्छी हो सुबह तुम

चलो आज इतने हो जाएँ निर्भीक
निकलें रात में सैर करने
चारों तरफ सन्नाटा है राज करता हुआ
और मेरे कदमों की आहट
तोड़ती हुई उसके घमंड को
लेकिन जाएँ तो जाएँ कहाँ
कोई काम नहीं, कोई मकसद नहीं
आज हल्की सी भी ओस नहीं
न ही कहीं कुहासा आँखों को रोकता हुआ
सब कुछ साफ-साफ खुले आकाश में
और फिर भी खुश नहीं
उदास हूँ, कुछ भी नहीं चाहिए मुझे
न ही किसी का इंतजार
जल्दी ही ऊब जाता है मन
चलो वापस चलें
शरीर इतना बड़ा अजगार
देर तक माँगता है आराम।
सुबह अच्छी हो तुम
हमेशा रहता है तुम्हारा इंतजार।

❑❑❑

चिता के नजदीक

वह धीरे–धीरे करके
पचासों मौत देख चुका था
जब भी किसी की मौत होती
सारे क्रिया–कर्म का भार
होता था उसी के कन्धों पर
और वह सब कुछ
चुपचाप करता चला जाता था,
होता था वही चिता के सबसे नजदीक
धूप और घी समर्पित करता हुआ
दूर से केवल उसकी पीठ दिखाई देती थी
और चेहरा आग की तरह चकमता हुआ
जब सामने की ओर वह अपना सिर घुमाता
घूरता हुआ सभी को
उसमें मृतक की थोड़ी सी आभा दिखाई देती थी
कुछ एक क्षणों के लिए
उसके चेहरे पर
और इसके साथ ही
बढ़ जाता था वह घर की ओर
शांत और चुपचाप
एक खामोशी को लादे हुए
जैसे राख पर पानी छिड़ककर
चला गया हो ।❑❑❑

जिसकी तलाश है हमें

सभी अपनी-अपनी वाह उछाल रहे हैं
और यह उछाल है गेंद की तरह
जबकि कान हो गए हैं गोलपोस्ट
यह अभ्यास है इसलिए
सभी को स्वीकारना पड़ेगा इन्हें कानों से
बिना भेद-भाव किए हुए
और जब निकलता है सच्चा नारा
आदमी हो जाता है चुपचाप
बिना किसी असुविधा के
होता है यह स्वीकार उसे
बार-बार सुनना चाहता है वह वैसे नारे
जो एक जोश पैदा कर देते हैं मन में
पुकारने लगते हैं वे खुद भी वैसे ही नारे
और सचमुच ऐसे ही नारों की
होती है तलाश हमें।

❑❑❑

मैं भूल गया हूँ

मैं भूल गया हूँ पृथ्वी तुम्हें
अब मेरे पाँव तुम पर नहीं पड़ते
तरस गयी हैं मेरी आँखें
तुम्हारी सुगंधित मिट्टी देखे बिना
दूर हो गया है यह सूर्य
दिखलाई नहीं देता मुझे
जिसका उदय और अस्त होना,
बैठा रहता हूँ घण्टों-घण्टों भर
इस व्यवसाय की कुर्सी में
और देखता रहता हूँ मेज को
जिससे उठकर कागज पर कागज
चिपकते जाते हैं मेरे चेहरे पर
और इस कलम से किये गये हस्ताक्षर
महसूस कराते हैं मेरी मौजूदगी भर।

❑❑❑

पेड़

फल गिरे नहीं की
वृक्षों का काम फिर से शुरू
और था कितना बचकाना प्रयास मेरा
सब कुछ देख लेना चाहता था
अपनी खुली–खुली आँखों से
और हँसते होंगे वृक्ष भी मुझ पर
मेरी इस सोच पर!
चाँद की तरह है मेरी जिन्दगी
कभी पूरी की पूरी
फिर घटती–बढ़ती हुई
पेड़, तुम भी तो इसी तरह हो!

❑❑❑

हरियाली

हल्के से वार से काट ली जाती है घास
और मेरा कोई क्या ले गया
कौन से जख्म दे गया पता भी नहीं
और जो ले गया उसकी कीमत भी नहीं
लेकिन सचमुच हरियाली नहीं मुझमें
और जब चीजें हो जाती हैं ठोस,
उसमें लहरें कैसी
मैंने खो दिया है लहरों की तरह बढ़ना
बढ़ता हूँ लौह मानव की तरह
जैसे सारा प्रेम दब गया हो
किसी भार के नीचे ।

❑❑❑

सुधार

मनुष्य का स्वभाव अपना-अपना
सुधारा नहीं जा सकता उसे
निचोड़ा जरूर जा सकता है रस उनका
जो हर दिन पैदा होता है उनमें
और इसी रस के कारण
आदर पाते हैं गुलाब के फूल
और दी जाती है जो खाद
ध्यान रखा जाता है
पड़े जडों के आस-पास ही
वरन् सारा श्रम बेकार।

❑❑❑

आशा में

कितने-कितने दिन निकल गये
इंतजार में
कभी न पहुँचे सुनहरे संसार में
हर दिन आता है और जाता है
थोड़ा सा हाथ छोड़
खिसक जाता है
हम थोड़े से उदासी से भरे
थके-थके से सो जाते हैं
लम्बी चादर में घुसकर
सुबह नया कुछ होने की आशा में।

❑❑❑

पार्क में एक दिन

इस पार्क में जमा होते जा रहें हैं लोग
कोई चुपचाप निहार रहा है
पौधों की हरियाली और फूलों को
कोई मग्न है कुर्सी पर बैठकर
प्रेम क्रीड़ा करने में,
कोई बढ़ रहा है आगे देखने की उत्सुकता लिए
कोई वहीं बैठ गया है घास पर
थोड़ी ठंडक का आनन्द लेने
कई बच्चे अलग-जगह पर हैं
झूला झूलते या दूसरे उपकरणों से खेलते हुए
सभी लोग फुर्सत में हैं, फिर भी व्यस्त।
अब थोड़ी देर में फव्वारे चालू होंगे
रंग-बिरंगे मन मोहते हुए
यही आखिरी खुशी होगी लोगों की
फिर लौटने लगेंगे वे वापस घर
कोई परिश्रम नहीं फिर भी थके हुए।

❑❑❑

अवसर

चील बहुत फुर्तीली है
आँखें उसकी तीव्र है
बखूबी देख लेती है शिकार को
बहुत दूर से
लेकिन तुम्हारे हिस्से में एक लाभ है
वो बहुत दूर है
जल्दी झपट्टा मारने का
पहला अवसर, तुम्हारे पास है।

❑❑❑

कबूतर

तालाब सूख गये हैं गर्मी से
और ये कबूतर पानी भरी बाल्टी से
बुझा रहें हैं अपनी प्यास
अभी थोड़ी देर पहले ही
दाना खाया है इन्होंने
और उड़ रहे हैं मंदिर के चारों ओर ।
तपती धूप में चमकता है
मंदिर का गुम्बज
और कौओं के लिए
कोई भोजन नहीं यहाँ
ये कबूतर ही हमेशा दोस्त रहे मंदिरों के
कहीं न कहीं इनकी जगह है
दीवारों में रहने की
और ये सीधे-सीधे पालतू,
हाथ की अँगुलियों तक पर
बैठाया जा सकता है इन्हें ।

❑❑❑

बारिश

आज सुबह-सुबह बारिश हुई
जिसका रस भर गया है जमीन पर
सब कुछ ताजा बिल्कुल ताजा
और ये बादल कितने सारे आकाश में
धीरे-धीरे घूम रहें हैं सिर के ऊपर से
जैसे तलाश हो जमीन पर फिर से आने की
थोड़ी देर हुई बारिश
और बन गए हैं कितने सारे चित्र
सबको निहारता हुआ बढ़ रहा हूँ मैं पैदल
जिन्दगी इसी में सार्थक लगती है थोड़ी सी ।

❑❑❑

उस दिन

यह कैसा शत्रु
सूर्य की सबसे रोबीली धूप की तरह
मँडरा रहा था मेरे तन पर
जैसे अब-तब सूख जाऊँगा मैं
कड़कड़ाने लगूँगा भूरी-भूरी मिट्टी की तरह
छीन लिया जायेगा मुझसे
किसी भी बीज को जन्म देने का हक
और ये किसान और ये हरियाली
दौड़ती हुई बकरियाँ
और ये गायें दूध को थन में बाँधे हुए
सब देख रही थीं मुर्झाते हुए मुझे
मैं बंद था रीठे की तरह कटघरे में
जिसे सभी थपथपा रहे थे
बंधन कोई नहीं खोल रहा था
सूखता जा रहा था मैं भीतर ही भीतर
और अस्त होता जा रहा था सूरज
पीठ छुपाये अपनी शर्म से ।

❑❑❑

पुराने अनुभव

देखो, कोई शोर उठ रहा है
कहीं दूर से उठता हुआ
किसी अंधी परत से निकलता हुआ
उसने एक आकार ले लिया है
स्वरूप बन गया है
मेरे पुराने अनुभवों का
एक ललक मीठी-मीठी
प्रवेश करने लगी है मेरी आँखों में
थिरकने लगा है वो मेरे साथ
सचमुच वो वापस लौट आया है
थोड़ी देर मेरा साथ देने के लिए
यही मेरे लिए उत्सव का वक्त है
खुशियाँ थोड़ी सी चेहरे पर
फिर वापस वैसा का वैसा मैं ।

❑❑❑

डर पैदा करना

केवल उगते या डूबते हुए सूर्य को ही
देखा जा सकता है नंगी आँखों से
फिर उसके बाद नहीं
और जानता हूँ
हाथी नहीं सुनेंगे
बात किन्हीं तलवारों की
ले जाया जा सकता है उन्हें दूर-दूर तक
सिर्फ सुई की नोक के सहारे ही,
इसलिए सोचता हूँ,
डर पैदा करना भी एक कला है ।

❑❑❑

पक्षी

कितने अच्छे लगते हैं
ये पक्षी
जब उतरते हैं धीरे-धीरे
आसमान से
बहते हुए पत्तों की तरह
और अपना पूरा शरीर
ढ़ीला-ढ़ाला कर
रख देते हैं जमीन पर
फिर कुछ देर खाते-पीते हैं
फुदकते हैं इधर-उधर और
वापस उड़ जाते हैं
अपनी पूरी ताकत से,
बिना किसी शोर के बादलों में
वाष्पित जल की तरह ।
देखता हूँ हर दिन
इसी तरह इनका आना और जाना
और चिन्तित नहीं देखा इन्हें कभी
आने वाले कल के लिए ।

❑❑❑

कम शब्द

मिले नहीं मुझे उतने कम शब्द
जिनसे रचा जाये छोटे में विराट को
या चुप रहकर भी कह दिया जाये
एक बयान गहनतम सुन्दरता का
फिर भी जो था थोड़ा सा
अगरबत्ती के धुएँ सा
करता था बयान उसी से लोगों का
और लगता था जुड़ा हुआ हूँ उनकी
आत्मा से ।

❑❑❑

ताई के लिए

इतनी लम्बी दूरी तय करने के बाद
पहुँच ही गया तुम तक
न तुम्हें कुछ चाहिए था
और न ही मुझे कुछ
जुड़े रहे हम दोनों
कील के सहारे लकड़ी–लकड़ी से जैसे
और प्रेम–प्रेम में मिल गया
सब कुछ–हुआ मौन
याद नहीं कभी बैठा था मैं
इस तरह से तुम्हारे पास उस दिन
और पहचाना तुमने मुझे ठीक से
एक निश्छल बालक में
हो गया था मैं रूपांतरित
बिना बैठे गोद में खेल सकता था
एक बच्चे की तरह ही
मन भूल गया था चलना–फिरना
हिलना–डुलना और सोचना तक
बस बना रहा दास तुम्हारा
रह सकता था इसी तरह मैं दास बना
बहुत देर तुम्हारे पास
लेकिन इतनी ही देर की अनुमति दी थी
जो आस्तित्व करता था मुझ पर राज
फिर से भीड़ में खो गया मैं

एक एहसास तुम्हें दिलाकर
मैं तेरा न होकर भी जुड़ा हूँ तुमसे
इस भीड़ में भी खोजती रहेंगी आँखें हमारी
एक–दूसरे को ।

❑❑❑

मछुआरा

सुबह–सुबह
अपनी छोटी सी नाव और जाल लिए
निकल पड़ा है मछुआरा
बीचों–बीच समुद्र में
इतना शक्तिशाली वेग समुद्र का
और वो अकेला
थोड़ा सा ज्ञान नौका चलाने का
और थोड़ी सी ताकत तैरने की
भाग्य ने दिया जब तक साथ,
बने रहे तब तक
अथवा गये तो फिर लौटे ही नहीं
यह नाव और जाल
जैसा उसका घोड़ा और तलवार
छीनना है भोजन समुद्र से
और कितना नम्र होगा समुद्र
जो हर बार जीतने उसे देता होगा।

❑❑❑

हमारा परिवार

जानते थे हम यह सबक
रखे जायेंगे जब टोकरी में आम
कोई नीचे होगा, कोई ऊपर
सभी का अपना–अपना भाग्य
इसलिए ईर्ष्या से दूर थे हम
और किसी दिन उत्सव पर
मिलते थे हम एक साथ
बैठते थे एक जगह खाते और गप्पें लड़ाते
लगता था एक ही खून, एक ही आत्मा
डोल रही है चारों ओर
और अगर कभी किसी ने ठुकराया भी दूसरे को,
फिर प्यार किया पहले की तरह
कभी–कभी अलग भी हो जाते थे हम
अलग–अलग द्वार की तरह
फिर वापस एक जैसे,
जैसे एक ही घर के
अलग–अलग द्वार ।

❑❑❑

बहुत पीछे

सारी बुराइयाँ जुड़ना चाहती हैं हमसे
उसी तरह जैसे ये सारी अच्छाइयाँ
और जब अच्छाइयों का आधिक्य हो हममें,
दौड़ते से पाँव दिखते हैं चलने पर भी
और छूट जाती हैं
बुराइयाँ बहुत पीछे ।

❑❑❑

ये घंटियाँ!

ऐ मंदिर की घंटियाँ!
क्यों नहीं बजती तुम अपने आप से
ये हाथ क्यों जगाते हैं, तुम्हें
लगता है इन्हें लगा दिया गया है
खुली हवा से दूर
और शायद अभी तक सोया हूँ मैं,
उनकी आवाज पहुँचती नहीं मुझ तक
कि मेरे हाथ अभी बहुत छोटे हैं ।

❑❑❑

डूबते हुए जहाज में प्रेम

जहाज डूबने को था
हमने देह से अधिक
प्रेम को बचाना चाहा
जब सारे लोग भाग रहे थे
हम प्रेम में थे मग्न
हमारा प्रेम सिलसिलेवार चलता रहा
जो बच सके, वे बच गये
जो नहीं बच पाये, वे नहीं बच पाये
उनमें हम दोनों भी थे
दोनों हाथ हमारे मिले हुए थे
साथ ही कन्धे से कन्धा
और मन से मन
भय कहीं नहीं था
पानी हमें झाँक रहा था
और हम एक–दूसरे को ।

❑❑❑

यह नाव

यह समुद्र में चलने वाली नाव
कितनी सुन्दर लगती है
पाल के सहारे हवाओं पर विजय पाती है
और पतवार के सहारे जल पर
खेद है मुझे
तुममें बैठा हुआ कोई आदमी नहीं दिखता
इतनी दूरी से
जैसे अपने आप कोई चीज चल रही हो
शायद इसी तरह चलता होगा समुद्र
और साथ-साथ इसके ये हवाएँ।

❑❑❑

खिलाड़ी

अचानक ही ऐसा हुआ था
जूड़ो कराटे का खेल देखकर
उसके भीतर खेल भावना जाग उठी थी
हर वक्त वह इसी अभ्यास में लगा रहता
जैसे वह गुरुत्वाकर्षण के सारे बल तोड़कर
शरीर से हर मनमाना काम करवा लेगा
धीरे–धीरे उसके पाँव
लोहे की तरह सख्त हो गये थे
और रबर की तरह लचीले
अपने दोनों हाथ ऊपर ले जाकर
शाप देने की विचित्र मुद्रा में
वह दुश्मन पर निशाना साधता हुआ
कमर के बल फुर्ती से आगे बढ़ता था
जैसे अपनी माँद छोड़कर
बाहर आया हुआ तूफान
और उसकी इस अदा में
एक संयम दिखता था
मानो उसका पूरा शरीर ही
अनुशासन में घुल गया हो
काम के प्रति उसकी यह ईमानदारी
मधुमक्खी की तरह हर पल
सामने बैठी नजर आती थी
और वह खिलाड़ी कम

एक शिकारी चीता
अधिक नजर आता था ।

❑❑❑

जाड़े के दिनों में

जैसे–जैसे धूप बढ़ती है
एक दादी माँ
आकर बैठ जाती है
उस जगह
सजा–सँवरा उसका चेहरा
निश्चिन्त, जैसे अब
कोई काम नहीं बचा जिन्दगी का
देखती रहती है
आते–जाते लोगों को
जिसने हाल–चाल पूछा,
उससे बतला लिया
या चुपचाप बैठी रही,
इन्तजार किया
फिर से छाँव आने का
इसी तरह धूप–छाँव में
बीत जाता उसका दिन ।

❑❑❑

एक अपंग बच्चे को देखकर

हर शाम देखा जा सकता है
उस बच्चे के चेहरे पर
एक उतावलापन
बाहर जाकर खेलने का
दूसरे बच्चों के साथ
जो रात होते-होते
लुप्त हो जाता था
अन्धकार में
फिर माँ उसके छोटे-छोटे पाँवों को
सजाकर पलंग पर
सुला देती थी
जहाँ से वह करता था
सैर पूरी दुनिया की
अपने सपनों के सहारे ।

❑❑❑

बँधा हुआ कुत्ता

वह सामने फेंकी हुई रोटियों को
बँधे हुए गले के सहारे ही
निगलता था पेट तक,
अगर वह होता आजाद
खुद ही बटोर रहा होता
अपना खाना घूम-घूमकर
खेलता हुआ यार-दोस्तों के साथ
यहाँ थोड़ से अच्छे स्वाद के लिए
फँसा हुआ था गुलाम बनकर
और उसकी आजादी सिमटकर रह गयी थी
एक गज दूरी भर तक ।

❑❑❑

अकेला आदमी

वो अकेला आदमी
किसी भीड़ में शामिल नहीं था
किसी के सुख-दुख में भी नहीं,
वो अकेला था
जैसे किसी भवन पर उगा हुआ
बरगद का पेड़
अपनी जड़ें खुद ढूँढ़ता हुआ
सूखी दीवारों पर जीता हुआ
यहाँ भी जीवन है
संघर्ष कर जीने का सुख
यह किसी को छाया नहीं दे सकता
न ही कोई फल
लेकिन थोड़-सी
हरियाली जरूर ।

❑❑❑

जबर्दस्ती

सभी का तर्क था
तुम्हें यह मकान बेच देना चाहिए
तुम अकेले हो
बनेगी जब इस पर
बहुमंजिली इमारत
बहुत सारे परिवार रह पायेंगे
एक साथ खुशी से
अधिक सोचने का
मौका नहीं दिया गया उसे
रातों–रात पंजों के जोर से
कर दिया गया उसे बाहर
चोंच में थोड़े से दाने लेकर
घायल कबूतर की तरह उड़ा वह
दूसरे ठौर की तलाश में
फिर कभी मुड़ कर नहीं देखा
इधर का रास्ता ।

❑❑❑

जल

जब सारे स्रोत सूख जाते हैं
जमीन में फिर भी जल रहता है
थोड़ी–सी आँख खोली नहीं मिट्टी की
कि पानी दिखलाई देने लगा तल से।
इन औरतों को यह पानी खींचते देख
लगता है धरती सचमुच उदार है
हर जीभ मिठास से भर देती है
और ये हाथ जिन्हें
हमेशा कमजोर समझा गया
अभी भी उतने ही मजबूत हैं
हर गृहस्थी का कण्ठ तर करते हुए ।

❑❑❑

सच

जो सच था, वो कभी दिखाई नहीं दिया
वह इतना कड़वा था
किसी ने उसे देखने की
जरूरत भी नहीं समझी
सच छुपा रहा
आदमी बचा रहा
लेकिन सच तो सामने ही था
आदमी की आँखें बन्द थीं।

❑❑❑

लकड़हारा

उसका अपना बोझ कम था,
लकड़ियों का ज्यादा
जिन्हें सिर पर उठाये चल रहा था वह
सारा काम उसका निश्चित
लकड़ी काटने से लेकर
बेचकर वापस घर लौटने तक
यहाँ तक कि कमाई भी निश्चित,
एक ही दशा में जी रहा था वह
पूरी जिन्दगी भर
एक ही काम करते हुए
जैसे कोई नदी गुजरती है
अपने सीमाबद्ध रास्तों से ।

❑❑❑

चुनाव

जब काम कम किये जाते हैं
और उन्हे प्रचारित अधिक
यह सोचकर कि कोई समझ नहीं पायेगा
उनकी यह चालाकी
अंत में हार जाते हैं वे लोग
क्योंकि सधी हुई नजरें
हमेशा पहचान लेती हैं
किसे तौलना चाहिए
रत्ती से और किसे लोहे से
सही समय आने पर
वे अपना उत्तर
तुरन्त उगल देते हैं ।

❑❑❑

मुरझाने से पहले

ये बहुत सारे फूल
सड़क के आस-पास
एक पेड़ पर खिले हुए
मुरझाने से पहले
बाँट चुके होते हैं
हजारों लोगों को
अपनी खुशियाँ ।

❑❑❑

उस खुशी के दिन

जैसे कोई संगीत को धुन बाँधती है हमें
या कोई तस्वीर अचानक प्रवेश कर जाती है हृदय में
उस दिन भी ऐसा ही कुछ हुआ था
वो रात कुछ ऐसी ही थी
अपनी अनन्त दूरी की चादर ले
सिमट कर आयी थी हमारे पास
इस तरह से ढका था हमें भूल जाएँ सारा प्रकाश
केवल हम दोनों हों
दो दिशाओं से उभरी हुई हवा का मिलना
या प्रकाश का प्रकाश से,
जहाँ भी बढ़ायें हाथ
छूते हों एक–दूसरे को
इतने अंधकार में भी
देख–सकते थे हम एक–दूसरे को
हम बढ़ते ही गये आगे और आगे
सारी दूरियाँ कम लगी
सारी गहराइयाँ कम
कहीं इच्छा नहीं थी रूकने की
कहीं इच्छा नहीं थी
यह सूर्य फिर से उगे
कोई न मिले हम से
को न देखे हमें
ओ काली रात

और गहरा ढकों हमें
और काला करो रंग अपना
ताकि कोई न खींचे पाँव हमारे
कोई न रोके मार्ग हमारा ।

❑❑❑

कोई कहता है आँखें खोलो

माँ प्रसव वेदना में चूर
जैसे कोई वहशी हाथ
रोक रहा है बच्चे को बाहर आने से
और धरती देख रही है रास्ता
एक नया लाल रखेगा कदम
उसकी मिट्टी पर
और करेगी वह स्वागत उसका
मिट्टी के फूल कणों से
सभी कर रहें हैं इंतजार वैसब्री से
थक गया हूँ मैं लम्बी साँस लेते लेते
और अचानक कोई कहता है
आँखें खोलो,
लो वे आ गया
यह चीख उसी की है!

❑❑❑

बड़ी उम्र के लोग

अपने अन्तिम दिनों में
कितने प्रिय हो गए थे वे मेरे
और बाद में भी हमेशा के लिए
और उनके लिखे कोई शब्द नहीं है मेरे पास
न ही कोई पत्र या संदेश
न ही याद कभी भी
उठाया था उन्होंने मुझ पर हाथ
बर्दास्त किया था मेरी हर जिद को
और कितने वर्षों बाद महसूस किया मैंने,
भीगा हुआ हूँ मैं उनके आँसूओं से
शायद इसीलिए लगते होंगे मुझे
बड़ी उम्र के हर आदमी अच्छे
और सचमुच चाहता था मैं छोटा रहना
हर किसी बड़े के सामने
और होता है कितना आनन्द
बने रहना लघुता में
यह बताना उतना ही मुश्किल है ।

❑❑❑

मेरे दोस्त

बहुत सारे दोस्त रहे मेरे
कुछ उन कौओं की तरह थे
जो वक्त आने पर
शोर मचा सकते थे हित में मेरे
लेकिन भीतर से उतने ही कमजोर
हवा की थोड़ी सी धमक से
उड़ जाया करते थे मुझे छोड़कर।
कुछ वैसे भी रहे
चील की तरह दूर से ही
मुझ पर दृष्टि जमाए हुए
जब भी मौका मिला
छीनकर ले गए खाना मेरा।
और कुछ थे बेहद ऊबाऊ
सुअर की थोथी नाक की तरह
हमेशा मुँह दिखलाते हुए
कुछ ही थे अच्छी बातें कहने वाले
कहकहे लगाने वाले थे ज्याद
लेकिन सभी दोस्त ही तो थे
इसलिए गले लगाए रखना
जरूरी था उन्हें ।

❑❑❑

आत्माएँ

वो आत्मा जो मरी नहीं है अभी तक
महसूस कर सकती है लोगों के सुख-दुख
शामिल हो सकती है उनके सुख में
उतनी ही त्वरा से दुख में भी
प्रत्येक जगह किया जा सकता है महसूस उसे
कोई चिंगारी नहीं है उसमें
न ही बर्फ जैसी कोई ठंड
वो हवा भी नहीं है, न ही ठोस पत्थर
यह कोई प्रेम है जिसका वर्णन नहीं होता
हर बार अपना रूप बदल देती है
हर बार नया आभास और नया स्वभाव
किया जा सकता है इसका आदान-प्रदान
और यादों में रह जाती है जो मरने पर भी
अच्छी होती हैं वे आत्माएँ।

❑❑❑

बदलाव

अब किसी कम्पन को
उतारता नहीं हूँ अपने शरीर पर
जैसे टहनी की तरह धैर्य से भरा हुआ
अच्छी लगती हैं किताबें
इन्होंने मुझे वापस बुला लिया
पूरी एकाग्रता से करता हूँ इनका अध्ययन
जैसे इन्होंने मुझे पूरा बाँध लिया अपने में
अच्छे–बुरे सारे अनुभव इनमें छिपे हैं
सभी पात्र खेलते हुए
मेरे मन की जमीन पर
और इस जिन्दगी के नाटक को
कभी बाहर से देखता हूँ, कभी भीतर से
इसी तरह से गुजर जाता है समय
अब किसी का इंतजार नहीं करता हूँ मैं ।

❑❑❑

ज्ञानी

शोर नहीं मचाते कभी पेड़
फूल देने के बाद,
यही है उनका स्वभाव
होता है पानी में बहने का स्वभाव
पत्थर में कठोरता का
रूई में मुलायम होने का
जीवन में कठिनता का
हृदय में धड़कने का
बच्चों में लापरवाही का
और जानकर सबके स्वभाव को
करता है जो उनका आदर
होता है वही ज्ञानी।

❑❑❑

मेरे पिता

लेकर गया था अस्थियाँ मैं विसर्जित करने
लगा था, हमेशा सीने से ही जुड़े रहेंगे वे मेरे
लेकिन नहीं था यह वश में मेरे
और दृश्य था कितना अद्‌भुत वह
जब छोड़ा था सब कुछ मैंने तीन नदियों के संगम में
और लगा था, पहली बार अलग हुए वे मुझसे
और खाली नाव, सूनी आँखे
खाली हाथ लिए निकला था बाहर रेत पर
जैसे बारिश को गँवाकर सूने बादल
और इन बादलों में जरूर छिपे होंगे मेरे पिता
हमेशा हमारी रक्षा करते हुए।

❑❑❑

मेरा देश

इस छोटी–सी जिन्दगी में
मिला था सौभाग्य मुझे यहाँ जन्म लेने का
देखने का कि जब खो जाता हो प्रकाश जिसका
किस तरह से करता है कोई कोशिश उसे पाने की
और गुलामी जब निकलकर आती है पिंजड़े से,
कितना कठिन होता है पैर जमाना आसमान में
और कितना तेज दौड़ना होता है
रहने के लिए सबके साथ ।

❑❑❑

आज अचानक

अचानक तुम्हारी याद आने लगी
तुम्हारी कोमल हथेली को
फिर से पकड़ लिया मैंने
बढ़ने लगा एक सुखद यात्रा की ओर
सारे धूल-कुहासे से ऊपर
तैरने लगा मैं
एक मधु से भरी नदी में
जिसके चारों ओर
रूई जैसे पहाड़ थे
और ओस टपक रही थी
ऊपर कोई रोक-टोक नहीं थी
न ही किसी से भय।

❑❑❑

शादी पर

सारा घर चमक रहा है
फूलों और रोशनियों से
जैसे बाग और तारें गले मिल रहे हों एक साथ
हर किसी के लिए स्वादिष्ट पदार्थ
जिसे एक कौर चाहिए उसके लिए दो
पानी की जगह शर्बत
बिना इत्र के कोई हवा नहीं
जहाँ भी पाँव रखो
कालीन का मखमली स्पर्श
जैसे शादी में साधारण लोग नहीं
देवता उतरे हैं दूसरे लोक से
आयोजकों पर इतना दबाव
जरा सी चूक कि हुई मुख पर शर्म की लालिमा
इतनी सारी खुशियों के फव्वारे के बीच
क्या गुजरती है एक पिता पर,
किसको है खबर ।

❑❑❑

आज समचुच लगा

आज सचमुच लगा,
मेरे बीमार पिता को
एकदम से मेरी जरूरत है
वे धीरे-धीरे बोल रहे थे
बहुत कम विश्वास था
उन्हें ठीक होने का
जितना भी जिया, संतुष्ठ थे उससे
लेकिन एक खालीपन था चेहरे पर
लगता था, प्यार ही भर सकता है जिसे
मैंने धीरे-धीरे हाथ बढ़ाया
अपना हाथ उनके हाथ में लिया
फिर कंधे पर फेरा हाथ
और आखिर में हाथ सिर पर रखकर
बच्चों की तरह प्यार किया
उन्होंने मुझे देखा
थोड़ी अच्छी तरह से
शायद उन्हें लगा,
अभी जीने के कुछ ये ही कारण बचे हैं
उन्हें जीना चाहिए
वे कुछ नहीं बोले
तेजी से आँख मूँदकर
मुँह फेर लिया ।

❑❑❑

समाज

झरने वर्षों की मेहनत के बाद
पत्थरों से फूटकर आते हैं बाहर
उनमें एक लय होती है
जो नदी की शक्ल में बदलकर
आगे बढ़ती जाती है
इसी तरह से बनता है समाज
एक–एक धार जुड़ी हुई
बढ़ता है एक लय से, उन्नति के रास्तों पर।

❑❑❑

अब

अब कोई जगह खाली दिखाई नहीं देती है
जैसे सब कुछ भरा हुआ है प्रेम से
हम विषाद में भी प्रेम देखते हैं
और लगता है, जिन्दगी की हर अड़चन
प्रेम बढ़ा रही है तुम्हारे लिए
जैसे पूरे के पूरे हम
तुममें डूबे हुए
और जो छलकता है हमारा प्रेम
आकाश की पूरी ऊँचाई को
छू जाता है यह
जैसे वहाँ तुम बैठे हुए हो।
हम तो हमेशा भ्रमित
क्या जाने वहाँ क्या हो रहा है
कभी लगा, कुछ दिखाई देगा
उसी पल बादल आड़ में आ गये
एक चलता-फिरता जीवन देखा था तुम्हारा
अब सब कुछ सपनों में है
और यहाँ तो कोई भाषा भी नहीं है
सब कुछ चुप रहकर बोला जाता है,
मिलोगे इस बार तो कुछ कहना
हम तुम्हें समझने की कोशिश करेंगे ।

❑❑❑

यह जगत

यह जगत् रचता है शब्द पर शब्द
प्रकाश जैसी तीव्रता से
और मुझे होता है कितना कम आभास
अपनी गति का
और ये उर्जाएँ, कितना आभारी हूँ मैं तुम्हारा
बुझने लगते हैं जब स्रोत मेरे
आकर देते हो रोशनी मेरे छोटे से कणों में भी
और मुझे तो चाहिए थोड़ी सी रोशनी भर
जिधर भी जाती हों मेरी आँखें
और बाकी सब तो है सूरज का असंख्य तारों का
गूँजती है हँसी इन तारों से भी कभी–कभी
जब सब एक होकर मिल जाते हैं
और यह हँसी ही बतलाती है
खेल रही है सभ्यता अपना खेल
और होता हूँ जब मैं अकेला
केवल मुस्कुराता हूँ
जैसे सिखाया गया नहीं कभी मुझे हँसना ।

❑❑❑

मेरा लेखन

निर्मल वक्त है यह लिखने का
कलम थामे सोचता हूँ
लिखूँ क्या सिर्फ अपने बारे में
या और लोगों के लिए भी
लेकिन थोड़ा सोचने का वक्त चाहिए
बुझी-बुझी हैं अभी आँखें मेरी
और दिमाग भी कमल की तरह खिलता हुआ
सपने टूट गए हैं और
दौड़ रहा हूँ वास्तविकता की ओर
पड़ी है ढ़ेर सारी चीजें
करना है चुनाव किसे उठाऊँ, किसे नहीं
या सबको देखूँ एक दृष्टि से
लेकिन ये दोनों आँखें कभी नहीं होती हैं एक साथ
अलग-अलग दृष्टिकोण से देखती हैं सबको
कोशिश करता हूँ मिट जाए भेदभाव
और प्रेम की रोशनी बिखरे सब पर
समान दृष्टि से।

❑❑❑

धावक

कुछ धावक दौड़ रहे हैं
हर बार पहले से तेज
उनमें से एक धावक
हमेशा पिछड़ जाता,
किसी तरह कोशिश करता
सबके साथ चले
लेकिन शरीर से मजबूर ।
पीछे कोच खड़ा है
हर बार हौसला बढ़ाता हुआ
लेकिन जिसमें रस नहीं,
उससे रस कैसे निकाले
वह पिछड़ा हुआ धावक
सबसे अलग लगता है
लेकिन पीछा कर रहा है
इसका मतलब है,
वह हारा नहीं है अब तक
पूरी तरह शामिल है दौड़ में
हो सकता है, कल दिखाई दे
सबसे आगे
और बाकी धावक इसके पीछे ।

❑❑❑

डूबती हुई नाव

नाव चोट खा गयी है
लगता है, डूब जाएगी
पानी धीरे-धीरे प्रवेश कर रहा है
दर्द से हिलती है नाव
पानी खून का प्यासा हो गया है
डर से सबके शरीर पत्थर
अब कुछ नहीं हो सकता है
एक ही सत्य है मौत
और मौत बढ़ रही है
बिना किसी शस्त्र के
कितनी आसानी से
छीन रही है प्राण
पानी भर रहा है
साँस की जगह
और दया दिखाई नहीं देती है
दूर-दूर तक ।

❑❑❑

रूठे रहे तुम

तुम धोती और कमीज में लिपटे
हमेशा एक जैसे रहे
और जिससे प्यार किया,
उसे पता भी नहीं चला
कितना चाहते रहे तुम उसे
बहुएँ रहीं बेटी की तरह
और पूरा आस-पड़ोस
परिवार की तरह ।
कभी-कभी छोटी-सी बात पर
नाराज हो जाया करते थे तुम
किन्तु मनाना कितना आसान था तुम्हें
इसी सरलता में तुम्हारी महानता थी
और जिसने तुम्हें नहीं समझा,
वो अभी अधूरा था
और कितने ज्ञान की बातें करने वाले
एकाएक तुम चुप हो गये
लगा कुछ पल की यह चुप्पी है
जल्दी ही चुप्पी तोड़कर
बातें करने लगोगे हमसे
लेकिन इस बार सचमुच रूठ गये थे तुम
इस बार मना नहीं पाये तुम्हें हम ।

❑❑❑

अब लगने लगा है

अब लगने लगा है
तुम ठीक नहीं होंगे
यह गहरी नींद कभी खुलेगी नहीं
स्वीकार करो इस वक्त
मेरा थोड़ा सा प्यार
अपने हाथों से
तुम्हारा सिर सहलाता हूँ
प्यार से देखता हूँ
पाँव छूता हूँ
हाथ जोड़ता हूँ
मुझे मालूम है तुम आँख नहीं खोलोगे
तुम दूरी बनाते जा रहे हो हमसे
तुम हट रहे हो पीछे
किसी गुप्त रास्ते से
हम नहीं जानते कहाँ है वो
कितने मूर्ख हैं हम
इस निढ़ाल शरीर के पास खड़े
ठग रहे हैं अपने आपको
अब तुम्हारी वीणा के स्वर सुनाई नहीं देते
एक-एक तार इसका बंद है
और खो रहा है हमारा चित्त
किसी सूनी मिट्टी में ।

❑❑❑

अब जब सुनते हैं

अब जब सुनते हैं तुम्हारी
उबड़-खाबड़ लड़खड़ती हुई आवाज
जो विवशता के सिवा
कोई अर्थ पैदा नहीं करती है
कितने भी हम कान
ले जायें तुम्हारी जीभ के पास
थोड़े से भी समर्थ नहीं होते
तम्हें समझ पाने में
ये हाथों के इशारे
हवा को इधर-उधर करते हुए
एक साथ अनेक अर्थ पैदा करते हैं
और तुम्हारे सुस्त चेहरे पर
ये ढुलकी हुई नसें
कोई भाव भी पैदा नहीं कर पाती हैं
इतनी सारी विफल वार्ताओं के बीच
लगता है, सिर्फ हाथ फेरते रहे तुम्हारे सिर पर
बस एक ही भाषा बची है यह प्रेम की
हम दोनों के बीच।

❑❑❑

मैंने उसे खोया नही था

मैंने उसे कभी खोया नहीं था
वह अभी भी मौजूद था
कितनी आसानी से दिखाई देता था
उसका चेहरा
तस्वीर के बीचोंबीच से निकलता हुआ
अफसोस है, उसे मैं कुछ भी दे नहीं सका
उसे कुछ चाहिए भी नहीं था
जो उसे चाहिए था,
वे थे मेरे प्रेम के आँसू
जो अब कितनी आसानी से
झरते है मेरी आँखों से
अफसोस कितनी देर से
पहचान सका था मैं उसे ।

❑❑❑

प्रशंसा

मैं कर सकता था प्रशंसा सबकी
एक बालू के कण से लेकर वृहद आकाश की
सब में हवा बनकर जिया था मैं
कहीं न कहीं इन सब में था मौजूद
क्योंकि जब भी बैठा था मैं इनके पास
पूरी तरह था इनका ही
और उनके ही कर्म बस शब्द थे मेरे
ये ही पैदा कर देते थे तरंगें मेरे मन में
जैसे तट के ही छोटे पत्थर नदी के जल में।

❑❑❑

चिट्ठियाँ

दूर से आती है चिट्ठियाँ
अपनों को और अधिक अपना बनाने के लिए
और दुनिया छोटे से कागज में सिमटकर
बैठ जाती है हृदय पर
पहला खत था यह बेटी का
मुझको लिखा हुआ
अपने सारे दुखरू-सुख का निचोड़
घूमता रहा कई दिनों तक मेरे मन में ।

❑❑❑

तुम्हारा न रहना

तुम्हारे अनगिनत बिम्ब
झाँकते हैं मेरी ओर
अपने हजार हाथों से दस्तक देते हुए
और उलझन में रहता हूँ
कैसे उन्हें प्रवेश दूँ
जबकि जानता हूँ
वे आयेंगे नहीं भीतर
केवल झाँकते रहेंगे बाहर से
तुम्हारा पास न रहना
इसी तरह का आभास देता है मुझे हर पल ।

❑❑❑